Scanned with OKEN Scanner

लोकभारती प्रकाशन
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग
इलाहाबाद-211 001

वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com

शाखाएँ : 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नयी दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने
पटना-800 006 (बिहार)
36-ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता-700 017

मूल्य : ₹ 105

संस्करण : 2018

© डॉ. राजबली पाण्डेय

सिटी ऑफसेट
इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

BHARTIYA PURALIPI
by Rajbali Pandey

ISBN : 978-81-8031-888-7

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

१. भारत में लेखन-कला की प्राचीनता : १

१. कतिपय प्राच्य विद्या विशारदों के मत, २. भारतीय अनुश्रुतियाँ, ३. विदेशी अनुश्रुतियाँ, ४. यवन लेखकों का साक्ष्य, ५. बौद्ध साहित्य का साक्ष्य, ६. ब्राह्मण साहित्य का साक्ष्य, ७. ठोस प्रमाण।

२. प्राचीन भारत में प्रयुक्त लिपियों के प्रकार और नाम : २०

१. अष्टाध्यायी में लिपियों का प्राचीनतम उल्लेख, २. जैन सूत्रों में लिपियों का उल्लेख, ३. ललितविस्तर में लिपियों का उल्लेख, ४. लिपियों का वर्गीकरण।

३. भारतीय लिपियों की उत्पत्ति : २७

(अ) सिन्धुघाटी की लिपि की उत्पत्ति—१. द्रविड़ उत्पत्ति का सिद्धान्त, २. सुमेरी वा मिस्री उत्पत्ति का सिद्धान्त, ३. स्वदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त, (आ) ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति—१. स्वदेशी उत्पत्ति के पोषक सिद्धान्त, २. विदेशी उत्पत्ति के पोषक सिद्धान्त, (इ) खरोष्ठी वर्णों की उत्पत्ति—१. नाम, २. नाम का मूल, ३. अरेमाई उत्पत्ति का सिद्धान्त, ४. भारतीय मूल।

४. प्राचीन भारतीय लिपियों के स्पष्टोकरण का इतिहास : ५२

१. परवर्ती ब्राह्मी लिपि का स्पष्टीकरण, २. प्राचीन ब्राह्मी लिपि का स्पष्टीकरण, ३. खरोष्ठी लिपि का स्पष्टीकरण, ४. सिन्धुघाटी की लिपि का स्पष्टोकरण।

५. लेखन-सामग्री : ६०

१. भूर्जपत्र, २. ताड़पत्र, ३. कागज, ४. सूती कपड़ा, ५. काष्ठपट्ट, ६. चर्म, ७. पत्थर, ८. ईंटें, ९. धातुएँ, १०. स्याही, ११. ओजार।

Scanned with OKEN Scanner

६. लेखन तथा उत्कीर्णन का व्यवसाय : ८१
१. लेखक, २. लिपिकर या लिबिकर, ३. दिविर, ४. कायस्थ, ५. करण, कणिक, करणिन्, शासनिन् तथा धर्मलेखिन्, ६. शिल्पिन्, रूपकार, सूत्रधार तथा शिलाकूट, ७. विवरण तैयार करवाने वाले अधिकारी, ८. लिपिकारों तथा लेखकों के लिए निर्देशक ग्रन्थ, ९. अक्षरों के विकास में लेखकों और उत्कीर्णकों का स्थान ।

७. लेखन-पद्धति : ९१
१. चिह्नों और वर्णों का दिग्विन्यास, २. लेखन दिशा, ३. पंक्ति, ४. वर्णों और शब्दों का समुदायीकरण, ५. विरामादि चिह्नों का प्रयोग, ६. पृष्ठांकन, ७. संशोधन, ८. छूट, ९. संक्षेपण १०. मांगलिक चिह्न और अलंकरण, ११. अंक ।

८. अभिलेखों के प्रकार : १११
१. प्रमुख प्रकार, २. धर्मशास्त्रों के अनुसार, ३. अभिलेखों के विषय के अनुसार ।

९. पुरालिपीय विधि : १३६
१. प्रारम्भ, २. आवाहन ३. आशीर्वचन, ४. प्रशंसा, ५. अभिशाप, ६. समाप्ति ।

१०. तिथि-अंकन की विधि तथा व्यवहृत सम्वत् : १६७
१. प्राक्-मौर्य अभिलेख, २. महावीर सम्वत् अथवा वीरनिर्वाण सम्वत्, ३. मौर्य अभिलेख, ४. मौर्यों की तिथि-अंकन-विधि, ५. शुङ्ग अभिलेख, ६. आन्ध्र-सातवाहन अभिलेख, ७. आन्ध्र-सातवाहनों के अन्तर्गत तिथि-अंकन-विधि की विशेषताएँ, ८. खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख ९. मौर्य सम्वत्, १०. दक्षिण-पश्चिमी भारत के शकों (महाराष्ट्र के क्षहरातों और उज्जयिनी के महाक्षत्रपों) के अभिलेख, ११. तिथि-अंकन की मुख्य विशेषताएँ, १२. प्रयुक्त सम्वत् : शक-सम्वत्, १३. हिन्दी वाह्लीक (इण्डो-बैक्ट्रियन) राजाओं के अभिलेख, १४. सम्वत्—शासनपरक या प्रचलित, १५. उत्तर-पश्चिमी भारत के शक पह्लवों के अभिलेख, १६. शक-पह्लव अभिलेखों में गृहीत तिथि-अंकन की विधि, १७. एक प्राचीन शक सम्वत्

१८. कुषाण अभिलेख (कनिष्क के शासन-काल से), १९. कनिष्क वर्गीय कुषाण अभिलेखों के तिथि-अंकन की प्रमुख विशेषताएँ, २०. कनिष्क सम्वत् की स्थापना और पहचान, २१. गणतन्त्रों एवं अन्य लोगों तथा राजस्थान और अवन्ती आकर (मध्य भारत) के राज्यों के अभिलेख, २२. तिथि-अंकन विधि, २३. कृत, मालव तथा विक्रम सम्वतों की उत्पत्ति तथा पहचान, विक्रम सम्वत् का प्रारंभिक काल में उल्लेख न होने का स्पष्टीकरण, विक्रम सम्वत् का उद्गम विन्दु, २४. गुप्तों, उनके समकालीनों तथा उत्तराधिकारियों का अभिलेख, २५. तिथि अंकन की प्रमुख विशेषताएँ, २६. गुप्त सम्वत् की स्थापना और उसका प्रचलन, २७. वलभी सम्वत्, २८. वाकाटकों तथा दक्षिण तथा सुदूर दक्षिण में उनके समकालीनों के अभिलेख, २९. तिथि-अंकन-विधि की प्रमुख विशेषताएँ, ३०. मौखरी और पुष्यभूति वंश के अभिलेख, ३१. तिथि-अंकन-विधि की प्रमुख विशेषताएँ, ३२. हर्ष सम्वत्, ३३. पूर्व मध्य-कालीन अभिलेख, ३४. तिथि-अंकन-विधि की प्रमुख विशेषताएँ।

सहायक ग्रंथ सूची : २१७

मौलिक आधार--१. ब्राह्मण साहित्य, २. बौद्ध साहित्य, ३. जैन साहित्य, ४. विदेशी विवरण, आधुनिक स्रोत (अ) पुरातत्त्व-सम्बन्धी, (आ) साधारण।

पुरालिपि-शास्त्र बड़ा ही रोचक विषय है। यह लिपि के विकास का अध्ययन [illegible] रखता है।

श्री बुहलर, जी. बूलर और महामहोपाध्याय पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के बाद पुरालिपि के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण खोज हुए हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाइयों के बाद इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी और नयी सम्भावनाएँ हुई हैं। इन खदानों से प्राप्त सामग्रियों से भारतीय लेखन-कला की प्राचीनता और उसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ है। इस हालत में भारतीय पुरालिपि पर एक हिन्दी पुस्तक की बड़ी उपयोगिता है। इस पुस्तक ने पुरालिपि क्षेत्र के रीता वर्षों का व्यवधान पाटने का काम किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन काल से सन् 1200 ई. तक भारतीय लेखन-कला का इतिहास प्रस्तुत है। विषय को सुगम बनाने के लिए आवश्यक प्रकरणों में उसका विवेचन प्रस्तुत है। अंत में आवश्यक सारिणियाँ भी दी गयी हैं।

पुरालिपि-शास्त्र के छात्रों, भावी शोधकर्ताओं और अनुसंधित्सु पाठकों के लिए यह ग्रंथ विशेष उपयोगी है।

लोकभारती प्रकाशन
इलाहाबाद नयी दिल्ली पटना